5
श्रीकृष्ण
सुलेख

मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है।

मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है।

परिश्रम के बिना सफलता संभव नहीं।

परिश्रम के बिना सफलता संभव नहीं।

Date_____ Teacher's Signature_____

अपने दोषों को ढकना मूर्खता है।

अपने दोषों को ढकना मूर्खता है।

गलती के लिए क्षमा माँगना वीरता है।

गलती के लिए क्षमा माँगना वीरता है।

Date_____ Teacher's Signature_____

असन्तोष पराजय का दूसरा नाम है।

असन्तोष पराजय का दूसरा नाम है।

धैर्यवान का सदा आदर होता है।

धैर्यवान का सदा आदर होता है।

Date_____ Teacher's Signature_____

आज का कार्य कल पर मत छोड़ो।

आज का कार्य कल पर मत छोड़ो।

परिश्रमी व्यक्ति सदा सफल होते हैं।

परिश्रमी व्यक्ति सदा सफल होते हैं।

Date_____ Teacher's Signature_____

कल करे, सो आज कर।

कल करे, सो आज कर।

आज करे सो अब ।

आज करे सो अब ।

Date_____ Teacher's Signature_____

चरित्रवान बनो। महान बनो।

चरित्रवान बनो। महान बनो।

अपमानित जीवन मृत्यु से भी बुरा है।

अपमानित जीवन मृत्यु से भी बुरा है।

Date_____ Teacher's Signature_____

धरती हमारी माता है, हम इसकी संतानें।

धरती हमारी माता है, हम इसकी संतानें।

हम इसी से जल, जीवन और अन्न पाते हैं।

हम इसी से जल, जीवन और अन्न पाते हैं।

Date_____ Teacher's Signature_____

स्वास्थ्य अनमोल धन है।

स्वास्थ्य अनमोल धन है।

दुर्बलता मन को भी दुर्बल बना देती है।

दुर्बलता मन को भी दुर्बल बना देती है।

Date_____ Teacher's Signature_____

सेवा का फल बहुत मीठा होता है।

सेवा का फल बहुत मीठा होता है।

सेवा का फल अवश्य मिलता है।

सेवा का फल अवश्य मिलता है।

Date_____ Teacher's Signature_____

माता-पिता व गुरु की सेवा करें।

माता-पिता व गुरु की सेवा करें।

गरीब व बीमार की सेवा करें।

गरीब व बीमार की सेवा करें।

Date_____ Teacher's Signature_____